|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 07. September 2025 | | | |
| **23. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: Weih 9,13-19; Zweite Lesung: Phlm 9b-10.12-17; Evangelium: Lk 14,25-33 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 416, 1+2 | | Was Gott tut |
|  | GL 418, 1+3 | | Befiehl du deine Wege |
|  | GL 81, 1+4+5 | | Lobet den Herren |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 437 | | Meine engen Grenzen |
|  | GL 130 | | Herr, erbarme dich |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 131 | | Ehre sei Gott in der Höhe |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 90, 3-6.12-14 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 64, 1 | | Die ihr ihn fürchtet |
|  | oder | |  |
|  | GL 428, 1+4 | | Herr, dir ist nichts verborgen |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *Lass dein Angesicht leuchten über deinem Knecht,.* | | |
|  | *Und lehre mich deine Gesetze* | | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 456 | Herr, du bist mein Leben | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 140, 1-3 | Kommt herbei, singt dem Herrn | |
|  | GL 440 | Hilf, Herr meines Lebens | |
|  | GL 460 | Wer leben will | |
|  | GL 461, 1-3 | Mir nach | |
|  | GL 474, 1-4 | Wenn wir das Leben teilen | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 132 | Heilig | |
| Agnus Dei: | GL 133 | Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 275, 1+2+4 | Selig, wem Christus | |
|  | GL 424, 1+3 | Wer nur den lieben Gott | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 382, 1+4+5 | Ein Danklied sei dem Herrn | |
|  | GL 409 | Singt dem Herrn ein neues Lied | |
|  |  |  | |
|  |  |  | |